आवाज़ ... आम आदमी की

इन्क़िलाबी नज़र

लखनऊ, शनिवार, 1 अगस्त 2026

संकट और गतिरोध जब वे होते हैं तो कम से कम उनका एक फायदा होता है कि वे हमें सोचने पर मजबूर करते हैं।
-जवाहर लाल नेहरू

वर्ष 18 अंक 330 मूल्य 4-00 रुपया पृष्ठ-12

फेफड़ों का कैंसर दुनिया में कैंसर से होने वाली मौतों का प्रमुख कारण : डॉ. राजेंद्र प्रसाद

लखनऊ (ब्यूरो)। विश्व फेफड़ा कैंसर दिवस एक अगस्त को मनाया जाता है। इसी परिदृश्य में एराज लखनऊ मेडिकल कॉलेज एंड हास्पिटल, एरा यूनिवर्सिटी के श्वसन रोग विभाग के वरिष्ठ प्रोफेसर और पद्मश्री डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने फेफड़ों के कैंसर के प्रति जागरुकता बढ़ाने और समय पर जांच कराने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि फेफड़ों का कैंसर दुनिया में कैंसर से होने वाली मौतों का सबसे बड़ा कारण बन चुका है और इसके बढ़ते मामलों को देखते हुए शुरुआती पहचान और बचाव पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है।

उन्होंने बताया कि वर्ष 2024 में

विश्व फेफड़ा कैंसर दिवस आज

एरा यूनिवर्सिटी के श्वसन रोग विशेषज्ञ ने चेताया, समय पर जांच से बचायी जा सकती है जान

विश्वभर में लगभग 26 लाख लोग फेफड़ों के कैंसर से प्रभावित हुए जबकि करीब 19 लाख लोगों की मौत इस बीमारी के कारण हुई। भारत में इसी अवधि में 112659 नए मामले सामने आए और 98687 मरीजों की मृत्यु दर्ज की गई। देश में फेफड़ों का कैंसर सभी नये कैंसर

मामलों का 7.2 प्रतिशत तथा कैंसर से होने वाली कुल मौतों का 10.9 प्रतिशत है। पुरुषों में यह सबसे सामान्य कैंसर और कैंसर से मृत्यु का प्रमुख कारण है। पद्मश्री प्रो. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने कहा कि धूम्रपान फेफड़ों के कैंसर का सबसे बड़ा जोखिम कारक है। इसके अलावा परोक्ष धूम्रपान (पैसिव स्मोकिंग) और बढ़ता वायु प्रदूषण भी इस बीमारी के प्रमुख कारणों में शामिल हैं। उन्होंने बताया कि भारत में बीड़ी का सेवन सबसे अधिक होता है जो कई मामलों में सिगरेट से भी अधिक नुकसानदायक साबित होता है। उन्होंने बताया कि पहले धूम्रपान करने वालों में स्कैमस सेल कार्सिनोमा सबसे सामान्य प्रकार था लेकिन अब एडेनोकार्सिनोमा धूम्रपान करने वालों और न करने वालों दोनों में सबसे अधिक पाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि लोडोज़ सीटी (एलडीसीटी) स्क्रीनिंग से उच्च जोखिम वाले लोगों में बीमारी की शुरुआती अवस्था में पहचान संभव है जिससे समय रहते प्रभावी उपचार किया जा सकता है।

विश्व फेफड़ा कैंसर दिवस पर फोरम ऑफ इंटरनेशनल रेस्पिरेटरी सोसाइटीज ने सरकारों और स्वास्थ्य संस्थाओं से उच्च जोखिम वाले लोगों के लिए वैज्ञानिक आधार पर स्क्रीनिंग कार्यक्रम लागू करने, जांच को सुलभ बनाने, लोगों में जागरूकता बढ़ाने तथा स्क्रीनिंग और उपचार में आने वाली आर्थिक एवं सामाजिक बाधाओं को दूर करने का आह्वान किया है। प्रो. राजेन्द्र प्रसाद ने बताया कि राष्ट्रीय कैंसर रजिस्ट्री कार्यक्रम के अनुसार (2022) भारत में फेफड़ों के कैंसर के 67.1 प्रतिशत मरीज पुरुष और 32.8 प्रतिशत महिलाएं हैं। वहीं भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के आंकड़ों के मुताबिक लगभग 44.8 प्रतिशत मामलों में बीमारी तब सामने आती है जब कैंसर शरीर के अन्य अंगों तक फैल चुका होता है। उन्होंने लोगों से तंबाकू और धूम्रपान के सभी रूपों का पूरी तरह त्याग करने तथा जोखिम वाले व्यक्तियों को समय-समय पर जांच कराने की अपील करते हुए कहा कि यदि हम तंबाकू से दूर रहें और समय पर जांच कराएं तो फेफड़ों के कैंसर के विरुद्ध इस लड़ाई में निश्चित रूप से जीत हासिल की जा सकती है।